पंजीयन संख्या : 68939 /98 अंक – 21, वर्ष – 24

ज्ञान तत्व

समाज शास्त्र

अर्थ शास्त्र

धर्म शास्त्र

राजनीति शास्त्र

434

- : सम्पादक :-

बजरंग लाल अग्रवाल

रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 16/08/2023

प्रकाशन की तारीख 01/08/2023

पाक्षिक मूल्य – 2.50/– (दो रूपये पचास पैसे)

पेज संख्या - 24

“ शराफत छोड़ो, समझदार बनो ”

“ सुनो सबकी, करो मन की ”

“ समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता ”

“ समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार ”

“ चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे ”

“ हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए ”

सर्वोदय की प्रासंगिक्ता

भारत में दो ऐसे संगठन हैं जो पिछले पचास वर्षों से निरंतर चर्चा में रहे हैं, एक है सर्वोदय और दूसरा है राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ। दोनों ही संगठनों में एक से बढ़कर एक त्यागी तपस्वी लोगों की बहुलता है। दोनों ही संगठनके लोग निरंतर सक्रिय रहते हैं। दोनों की ही अपनी विशिष्ट कार्य प्रणाली है।

अनेक समानताओं के बाद भी दोनों में काफी असमानताएं हैं। संघ एक संगठन का स्वरूप है जिसके नेता निर्णय करते हैं और कार्यकर्ता तदनुसार आचरण करते हैं जबकि सर्वोदय का प्रत्येक कार्यकर्ता ही स्वयं में एक नेता है। इसमें न तो एकल नेतृत्व है न ही प्रतिबद्ध अनुकरणकर्ता। संघ का एक स्पष्ट लक्ष्य है हिन्दू तुष्टीकरण के माध्यम से भारतीय राजनीति में निर्णायक भूमिका अदा करना जबकी सर्वोदय दिशाहीन है, उसका कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं। कभी भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन तो कभी स्वदेशी का नारा, कभी ग्राम स्वराज्य तो कभी साम्प्रदायिकता उन्मूलन। एक वर्ष के लिये भी इनके लक्ष्य टिकाऊ या स्पष्ट नहीं होते। संघ मुस्लिम संगठनों की क्रिया के विरूद्ध तीव्र योजनाबद्ध तथा परिणाममूलक प्रतिक्रिया करता है। सर्वोदय संघ की प्रतिक्रिया के विरूद्ध लचर, अविचारित तथा शक्ति प्रदर्शन के लिये प्रतिक्रिया करता हैं। संघ अन्य संगठनों का उपयोग करना जानता है जबकि सर्वोदय किसी संगठन का उपयोग नहीं कर सकता है भले ही उसी का कोई उपयोग कर ले। संघ नेतृत्व पूरी तरह सतर्क, सक्रिय और चालाक है। सर्वोदय नेतृत्व सक्रिय तो है किन्तु ढीला–ढाला तथा शरीफ प्रवृति का है। संघ का उद्देश्य सत्ता प्रधान है और परिणाम सफलता है जबकि सर्वोदय का उद्देश्य जनहित का है किन्तु परिणाम शून्य है।

सर्वोदय का बीस वर्ष पहले पटना में सम्मेलन सम्पन्न हुआ था। मंच पर कुलदीप नैयर, प्रभाष जोषी सहित अनेक बुद्धिजीवी मौजूद थे। तीन दिनों के सम्मेलन में सिर्फ साम्प्रदायिकता ही विचारणीय मुद्दा रहा। साम्प्रदायिकता की चर्चा भी गुजरात चुनावों पर आकर सिमट गईं। तय किया गया कि गुजरात के आगामी चुनावों में सर्वोदय का बिल्कुल सामने आकर भा.ज.पा. को हराना है। घोषित किया गया कि वर्तमान गुजरात चुनाव में, सर्वोदय के अस्तित्व को चुनौती मानकर प्रत्येक गांधीवादी कार्यकर्ता को पूरी शक्ति से लग जाना है। सभी वक्ताओं ने एक से बढ़कर एक घोषणाएं कीं। ऐसा लगा कि गुजरात चुनाव एक तरह से सर्वोदय ही लड़ रहा है। चुनाव की तारीख घोषित होते ही सभी कार्यकर्ताओं को गुजरात जाने का आहवान किया गया। संघ की साम्प्रदायिकता की भरपूर आलोचना हुई। किन्तु यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मुस्लिम साम्प्रदायिकता की पूरे कार्यक्रम में कोई चर्चा ही नहीं हुई। कई वक्ताओं ने तो गोधरा अग्नि कांड तथा ग्यारह सितम्बर के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर आक्रमण तक में मुस्लिम कट्टरवाद का बचाव किया। तीन दिनों का पूरा सम्मेलन देखकर कोई भी तटस्थ प्रेक्षक यह निष्कर्ष निकाल सकता था कि उपरोक्त आयोजन धर्म निरपेक्ष तटस्थ तथा

समाधान खोजी विचारकों का सम्मेलन न होकर ऐसे शरीफ, भावना प्रधान तथा दिग्भ्रमित किन्तु स्थापित लोगों का सम्मेलन है, जो पूरी तरह वामपंथी नारों से प्रभावित है। प्रभाष जोशी जी का भाषण पूरी तरह तथ्यों पर आधारित था किन्तु निष्कर्ष एक पक्षीय थे। उन्होंने कहा कि संघ हिन्दुओं का चर्च बनाना चाहता है जिससे कि वह भी हिन्दुओं को उसी तरह मनमानी दिशा में संचालित कर सके जिस तरह चर्च कर रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि संघ हिन्दुओं का तालिबानीकरण करना चाहता है जो कि हिन्दुओं के लिए घातक है। श्री प्रभात जी की दोनों ही बातें अक्षरशः सत्य है। संघ के ये प्रयास हिन्दुओं के लिये घातक है। किन्तु ईसाइयों की चर्च प्रणाली और मुसलमानों की तालिबानी कट्टरवाद समाज के लिये घातक है, यह बात वे नहीं कह सके। सर्वोदय के उस मंच से हिन्दुत्व की मूल अवधारणा की सुरक्षा हेतु संघ को चुनौती दी गई, किन्तु समाज की मूल अवधारणा को ईसाइयों की चर्च प्रणाली तथा मुसलमानों की तालिबान प्रणाली से होने वाले खतरों के प्रति सबकुछ समझते हुए भी चुप रहना उचित समझा गया। ऐसा महसूस हुआ कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भारतीय जनता पार्टी की ही एक सामाजिक शाखा की तरह काम करती हैं तथा सर्वोदय कांग्रेस की सामाजिक शाखा की तरह काम करती है। सर्वोदय की प्रत्येक चर्चा में गांधी हत्या की प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सर्वोदय गांधी हत्या के लिए तो संघ को अक्षम्य दोषी मानता है किन्तु भारत विभाजन में मुसलमानों की भूमिका अथवा सम्पूर्ण विश्व में अन्य धर्मावलम्बियों से निरंतर टकराव में मुसलमानों की भूमिका को भूल जाने योग्य दोष से अधिक नहीं मानता।

मेरे विचार में सर्वोदय भटक रहा है। सन पचहत्तर में सर्वोदय ने इंदिरा गांधी की तानाशाही के विरूद्ध एक निर्णायक पहल की। किन्तु सर्वोदय से भूल हुई कि उसने उक्त पहल करने में संघ तथा साम्यवादियों को मिलाकर एक मंच बना दिया। संघ और साम्यवादी उतने ही कट्टर होते हैं जितने कि मुसलमान। ये व्यक्ति के रूप में तो कहीं भी रह सकते हैं किन्तु दल के रूप में ये पूरी तरह सतर्क और सक्रिय रहते हैं। सर्वोदय ने तानाशाही के विरूद्ध ऐतिहासिक संघर्ष का नेतृत्व किया किन्तु देश में कोई निर्णायक परिर्वतन नहीं आ सका। अब पुनः सर्वोदय देश में वही भूल दुहराने जा रहा है। देश में भा.ज.पा. को हराकर कांग्रेस को सत्ता दिलाने से सर्वोदय की अपनी शक्ति का प्रदर्शन तो संभव है किन्तु समाज को कोई लाभ नहीं होगा। संघ को साथ लेकर सर्वोदय ने कांग्रेस को सबक सिखाया था और अब कॉंग्रेस को साथ लेकर भा.ज.पा.को सबक सिखाना किसी भी दृष्टि से समाज की समस्याओं के समाधान में ठोस पहल नहीं है। सर्वोदय को इससे बचना चाहिए।

वर्तमान समय में भारत ग्यारह ऐसी समस्याओं से जूझ रहा है जिनके समाधान की दिशा में न भा.ज.पा. गम्भीर है और न ही कांग्रेस। वे हैं1—चोरी, डकैती, लूट, 2—बलात्कार, 3—आतंकवाद,4—धोखा,5—मिलावट, कमतौल,6—आर्थिक असमानता, 7—श्रम शोषण,8—चरित्र पतन,9—भ्रष्टाचार,

10–साम्प्रदायिकता,11–जातीय संघर्ष। ये सभी समस्याएं निरंतर चिन्ताजनक रूप से बढ़ रही है। सर्वोदय का कर्तव्य है कि वह इन सभी समस्याओं पर गम्भीर मंथन करे। सन पचहत्तर का जयप्रकाश आंदोलन भ्रष्टाचार के विरूद्ध क्रान्ति का प्रयास था और वर्तमान मोदी सशक्तिकरण साम्प्रदायिकता के विरूद्ध क्रान्ति का प्रयास है। पचहत्तर की क्रान्ति सफल होकर भी भ्रष्टाचार पर कोई निर्णायक रोक नहीं लगा सकी और वर्तमान मोदी विरोधी आंदोलन यदि सफल भी हो जाये तो साम्प्रदायिकता पर कोई रोक नहीं लगेगी। भले ही साम्प्रदायिक संघर्षो में शामिल एक पक्ष ''संघ'' कमजोर हो जावे। एक दूसरे पर अन्याय करने के उद्देश्य से संघर्ष कर रहे मुस्लिम और संघ परिवार में से किसी एक का ऐसा विरोध करना जो दूसरे को मजबूत कर दे ना ता न्यायसंगत है, ना ही समस्या का समाधान। शान्ति के उद्देश्य से अन्याय को प्रोत्साहन देना किसी दृष्टि से उचित नहीं है। मोदी के विरोध में सर्वोदय के प्रयास को कुछ इसी तरह की भूल मानी जानी चाहिये।

ऊपर लिखी ग्यारह समस्याओं पर गम्भीरता से चिन्तन मनन करें तो ये सभी एक–दूसरे से जुडी हुई हैं। इन सबका सामूहिक समाधान के साथ–साथ इनके अलग–अलग समाधान भी करने होंगे किन्तु सभी समस्याओं पर एक साथ काम शुरू करना होगा। संघ सिर्फ एक समस्या के समाधान में लगा हुआ है और सर्वोदय ढुलमुल नीति पर चलता रहता हैं। संघ और सर्वोदय यदि मिलकर इन ग्यारह समस्याओं के समाधान में लग जावें तो एक वर्ष ही पर्याप्त हैं। किन्तु इसके लिये संघ ने तो अपनी लाईन ठीक कर ली है और सर्वोदय को अपनी नीतियां बदलनी पड़ेगी। यदि संघ अपने लक्ष्य में संशोधन न भी करना चाहे तो सर्वोदय अकेला भी पॉच वर्षों में सफल परिवर्तन कर सकता है। किन्तु सर्वोदय को अपनी शराफत को समझदारी में बदलना होगा। यदि अब भी सर्वोदय ने अपनी नीतियों में आमूल–चूल परिवर्तन नहीं किया तो सर्वोदय समाज की समस्याओं के समाधान में कोई निर्णायक भूमिका निभा सकेगा, इसमें मुझे पूरा संदेह है।

सर्वोदय नेतृत्व जिन लोगों के हाथ में है, उन लोगों की नजर गांधी विचारों पर ना होकर गांधी संस्थाओं की संपत्ति पर अधिक है। गांधी और विनोबा ने किसी पद और धन–संपत्ति से दूरी बनाकर रखी थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि एक बार सरकार ने सर्वोदय को कुछ करोड़ रुपए देना चाहा था जिसे सर्वोदय ने लेने से इंकार कर दिया था। आज का सर्वोदय सत्ता और संपत्ति के लिए मुकदमें लड़ रहा है, आंदोलन कर रहा है और सबसे बढ़कर कि गांधी के नाम पर दुकानदारी कर रहा है। क्या ही अच्छा होता कि सर्वोदय सत्ता–संपत्ति के झगड़ों से दूर होकर लोक स्वराज के लिए आगे आ जाता तो सारे झगड़े अपने आप ही खत्म हो जाते। गांधी, बिनोवा, जयप्रकाश के नाम पर दुकानदारी करने वाले समूह या व्यक्ति भी बेनकाब हो जाते और देश में एक नया आंदोलन शुरू हो जाता। सर्वोदय के लिए तो यही उचित होगा कि वह गांधी, जयप्रकाश, बिनोवा या अन्ना हजारे के पीछे ना चले बल्कि वहां से अपने

आंदोलन की शुरुआत करे जहां गांधी, जयप्रकाश और अन्ना हजारे का काम अधूरा छूट गया था। मेरी सलाह है कि सर्वोदय समाज संघ, भाजपा या नरेंद्र मोदी को मिटाने की कोशिश ना करके सिर्फ अपनी लाइन मजबूत करने की शुरुआत करें तो सर्वोदय फिर से जिंदा हो सकता है। उसके आपसी झगड़े भी खत्म हो सकते हैं और समाज का भी बहुत भला हो सकता है।

ज्ञान तत्व प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1—आप लंबे समय से लिखते रहे हैं कि सर्वोदय एक संस्था है और संघ एक संगठन है। आज आप सर्वोदय को भी एक संगठन सरीखा लिख रहे हैं। ऐसा क्यों है?

उत्तर —सर्वोदय तब तक संस्था के रूप में था जब तक गांधीजी जीवित थे। गांधी के मरते ही नेहरू जी तथा अन्य नेताओं ने मिलकर सर्वोदय का संस्थागत स्वरूप बदला दिया और उसे संगठन बना दिया। इस संगठनात्मक ढांचे का अध्यक्ष विनोबा भावे को चुना गया।गांधीजी के जीवित रहते तक बिनोवा भावे सर्वोदय के अध्यक्ष नहीं थे। स्वभाविक है कि संगठन बनाकर राजनेताओं ने सर्वोदय का संघ के खिलाफ उपयोग किया। इसका संगठनात्मक लाभ तो राजनेताओं को मिला और नुकसान सर्वोदय का हुआ। सर्वोदय अपने सारे संस्थागत कार्य छोड़कर राजनीति में फँसगया। गांधी के मरते ही सर्वोदय समाज नेहरू परिवार की चापलूसी में लग गया। उस समय से लेकर आज तक के 70 वर्षों में सर्वोदय संघ के विरुद्ध ही एकमात्र कार्य कर रहा है। इस विरोधी कार्य में साम्यवादी भी सर्वोदय को मजबूत करते रहते थे और नेहरू परिवार भी। मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि सर्वोदय पहले संस्था के रूप में था और जब से संगठन बना तब से सर्वोदय गांधी मार्ग से भटक गया।

प्रश्न 2— गोधरा कांड की आड़ लेकर नरेंद्र मोदी ने गुजरात में बड़ी संख्या में मुसलमानों का कत्लेआम करवाया। आप इस घटना के बाद भी नरेंद्र मोदी के पक्ष में खड़े रहते हैं। इसका क्या आधार है?

उत्तर – गोधरा में मुसलमानों ने पहल करके पहले कारसेवकों को मरवाया। स्वाभाविक है कि संघ विरोधी ताकतों ने अपराधी मुसलमानों की मदद की। यहां तक कि रेल मंत्री लालू प्रसाद ने गोधरा कांड को एक दुर्घटना सिद्ध करने की कोशिश की। मैं नरेंद्र मोदी की इस बात के लिए प्रशंसा करता हूँ कि उन्होंने मुस्लिम आक्रामकता से परेशान होकर मुसलमानों को सबक सिखाने में हिंदुओं की अप्रत्यक्ष मदद की। आप अच्छी तरह समझते हैं कि गुजरात में मुसलमान अब सीधा चलना सीख गया है। अब तो नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बन गए हैं और गोधरा की घटना का ही पूरे देश में यह परिणाम दिख रहा है कि नरेंद्र मोदी के आने के बाद मुसलमान गोधरा जैसा कोई क्रियाकलाप नहीं कर पा रहे हैं। मैंने तो 2002 में ही नरेंद्र मोदी के इस कार्य की खुलकर प्रशंसा की थी और लिखा था कि सर्वोदय को नरेंद्र मोदी का विरोध नहीं करना चाहिए। उस समय सर्वोदय नेहरू परिवार का अंधभक्त बना हुआ था और मोदी

का खुलकर विरोध किया। आज सर्वोदय समाज इसीलिए खत्म हो रहा है कि उसने राजनीति से दूर रहकर नेहरू परिवार के पिछलग्गू बनने की भूल की। जब नरेंद्र मोदी ने गोधरा में अपनी पहली परीक्षा पास की तभी से मैं नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में देखने लगा था और अब तो नरेंद्र मोदी राष्ट्र की सीमा से भी ऊपर जाकर विश्व स्तरीय व्यक्तित्व की परीक्षा में सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं।

प्रश्न 3—आप प्रभाष जोशी के प्रशंसक हैं लेकिन आज के लेख में आपने प्रभाष जोशी की आलोचना की है।इस मत परिवर्तन का आधार क्या है?

उत्तर —मैं प्रभाष जोशी का पहले भी प्रशंसक था और आज भी हूँ। लेकिन मैं प्रभाष जोशी का समर्थक ना पहले था और ना अब हूँ। एक पत्रकार के रूप में प्रभाष जोशी बहुत ईमानदार रहे। उन्होंने स्वच्छ और स्वस्थ पत्रकारिता को बहुत आगे बढ़ाने की कोशिश की। लेकिन प्रभाष जोशी साम्यवाद से प्रभावित थे और यह साम्यवाद का प्रभाव उनको गलत दिशा में ले जाता था। सर्वोदय पर भी साम्यवादियों का बहुत प्रभाव था इसलिए साम्यवादियों से प्रभाष जोशी के बहुत अच्छे संबंध थे। प्रभाष जोशी ने सर्वोदय को मोदी के विरुद्ध आगे आने के लिए बहुत प्रेरित किया। प्रभाष जोशी जी के प्रयत्न से मैं उस समय भी सहमत नहीं था और आज भी सहमत नहीं हूँ। जब सर्वोदय का गांधीवादी ग्रुप ठाकुरदास बंग, सिद्धराज ढडढा आदि के नेतृत्व में लोक स्वराज की दिशा में बढ़ने के लिए सेवाग्राम आश्रम में सम्मेलन कर रहा था तब प्रभाष जोशी उस में आने की सहमति देने के बाद भी इसीलिए नहीं आए कि साम्यवादियों ने उनको रोक दिया।मैंने एक बार ज्ञान तत्व पाक्षिक मेंइस बात के लिए प्रभाष जोशी की खुली आलोचना की थी कि दिल्ली में अंसल प्लाजा में पुलिस द्वारा फर्जी मुठभेड़ में एक अपराधी को मार देने की प्रभाष जी ने खुली आलोचना की थी। मैं प्रभाषजोशी जी द्वारा की गई इस आलोचना के पक्ष में नहीं था। फिर भी उस दौर में और आज भी मैं प्रभाष जोशी का व्यक्तिगत रूप से प्रशंसक हूँ।

<u>विविध विषयों पर बजरंग मुनि जी के महत्वपूर्ण लेख</u>

<u>1— गांधी विचार को बचाने की जरूरत :</u>

समाचार मिला है कि वाराणसी सर्व सेवा संघ के भवन के स्वामित्व के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने भी सर्व सेवा संघ का पक्ष सुनने से इनकार कर दिया है। सर्व सेवा संघ की संपत्ति को पिछले कई वर्षों से कुछ गांधीवादी अपनी व्यक्तिगत संपत्ति मानने लगे थे। उन्हें सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय से बहुत निराशा हुई है। जो लोग इतने दिनों से संपत्ति के लालच में गांधी नाम की माला जप रहे थे उन लोगों के पैरों तले अब जमीन खिसक गई है। गांधी या बिनोवा सत्ता और संपत्ति के झगड़े से दूर रहते थे और आज के पेशेवर गांधीवादी सत्ता और संपत्ति के लिए ही गांधी के नाम का दुरुपयोग कर रहे हैं।

मैंने 20 वर्ष पहले सर्वोदय के उच्च स्तरीय बैठक में यह सुझाव दिया था कि

सर्वोदय को संगठन के रूप में गुजरात में नरेंद्र मोदी का विरोध नहीं करना चाहिए, भले ही व्यक्तिगत रूप से कोई विरोध कर सकता है। लेकिन उस समय तो गांधीवादियों की पीठ पर नेहरू का भूत सवार था। इस संबंध में मैंने कई लेख ज्ञान तत्व में लिखे भी थे। कुछ प्रमुख गांधीवादी मेरी बात से सहमत भी हुए लेकिन जिनके दिमाग में गांधीवादी संस्थाओं की संपत्ति पर व्यक्तिगत अधिकार का भूत सवार था वह लोग उस समय भारी पड़े। मैंने इस संबंध में पिछले 20 वर्षों में कई बार लिखा भी था। अभी दस दिन पहले ही मेरे एक निकट के गांधीवादी मित्र जे पी सिंह जी ने इस संबंध में सर्व सेवा संघ की मदद का निवेदन किया था। मैंने उन्हें समझाया कि मैं दोनों पक्षों के बीच समझौता करा सकता हूं जो मोदी सरकार मान जाएगी। आप गांधीवादियों से पहले पूछ लीजिए। चर्चा में मैंने यह बात भी पहले ही बता दी थी कि समझौता का मसौदा क्या होगा। लेकिन गांधीवादी तो साम्यवादी प्रशांत भूषण पर विश्वास करके चल रहे थे। उन्होंने बात नहीं मानी और फिर हाई कोर्ट और अन्त में सुप्रीम कोर्ट तक चले गए। प्रश्न सिर्फ सर्व सेवा संघ के वाराणसी कार्यालय का नहीं है, बल्कि समस्या यह है कि गांधीवादियों का एक छोटा–सा धूर्तों का गिरोह हावी हो गया है और वह किसी भी नए विचार या नए व्यक्ति को विचारों की स्वतंत्रता नहीं देना चाहता। अब थोड़े से ही गांधीवादी बचे हैं जो स्वतंत्रतापूर्वक सोच पा रहे हैं अन्यथा धूर्तों और मूर्खों का जमघट गांधी के नाम को कलंकित कर रहा है। मुट्ठी भर मरियल गांधीवादी नरेंद्र मोदी को चुनौती देने की मूर्खता कर रहे हैं। अब भी समय है कि असली गांधीवादी सत्ता और संपत्ति का लालच छोड़कर लोक स्वराज आंदोलन की शुरुआत करें। जहां तक गांधी, जयप्रकाश, अन्ना हजारे जा चुके थे उसके आगे जाने की आवश्यकता है, पीछे चलने की नहीं। सैद्धांतिक दृष्टि से राजनीतिक सत्ता संघर्ष से दूर रहना ही वर्तमान समय की समझदारी है।

मेरे जीवन भर का व्यक्तिगत अनुभव है कि गांधीवादियों में अभी भी बहुत अच्छे–अच्छे लोग हैं और संघ में भी। यदि हम दुनिया की प्रमुख समस्याओं का समाधान चाहते हैं तो इन दोनों समूहों के अच्छे लोगों को एक साथ बिठाकर वैचारिक सामंजस्य का प्रयत्न करना होगा। मैंने यह प्रयत्न किया और मुझे बहुत सफलता भी मिली। अंतर केवल यह है कि गांधीवादियों के जो प्रमुख लोग इस अभियान से मेरे साथ जुड़े हुए थे, धीरे–धीरे वे या तो काफी वृद्ध हो गए या इस दुनिया से चल बसे। संघ के जो लोग जुड़े वह धीरे–धीरे बड़े होकर अब पावर में आ गए हैं। यही कारण है कि गांधीवादियों पर मेरा प्रभाव घटता जा रहा है और संघ में मेरा प्रभाव बढ़ता जा रहा है। गांधीवादियों में ठाकुर दास जी बंग, सिद्धराज जी ढड्ढा, एस एन सुब्बाराव जी, आर्य भूषण भारद्वाज जी, श्याम बहादुर नम्र, अविनाश भाई, रूद्रभान भाई सरीखे त्यागी तपस्वियों ने इस दिशा में एक साथ मिलकर काम किया था। मैं जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया सरीखे समाजवादी नेताओं के साथ मिलकर संघ के साथ तालमेल बिठाया करता था। आज भी आचार्य पंकज जी, ओम प्रकाश दुबे, धर्मेंद्र राजपूत, दुर्गा प्रसाद आर्य, सिद्धार्थ शर्मा जी, एम एच पाटिल सरीखे अनेक लोग मुझे

अपने साथ जोड़ कर यह महसूस करते हैं कि अच्छे लोगों को एक साथ जुड़ना ही चाहिए। सत्ता और संपत्ति का झगड़ा उचित नहीं है। दूसरी ओर कुमार प्रशांत, रामचंद्र राही, महादेव विद्रोही सरीखे अनेक लोग हैं जो इस प्रकार की एकता के घोर विरोधी हैं। दुर्भाग्य यह है कि इस प्रकार के विरोधी लोग सर्वोदय के नेतृत्व पर हावी हो गए हैं तथा दिन रात चौबीसों घंटे या तो सत्ता और संपत्ति के विवाद में न्यायालय के चक्कर लगाते हैं अथवा नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत के विरोध में नेहरू परिवार की चापलूसी करते रहते हैं। एक अमरनाथ भाई अभी इस प्रकार से बचे हुए हैं जो दोनों गुटों में संतुलन बनाते हैं। हमारे सामने कठिनाई यह है कि हम सत्ता और संपत्ति के झगड़े से दूर रहकर लोक स्वराज की लड़ाई लड़ना चाहते हैं तो यह गांधीवादी लोक स्वराज की लड़ाई से दूर रहकर सत्ता और संपत्ति की लड़ाई लड़ना चाहते हैं। इस टकराव के कारण वर्तमान लोक स्वराज्य अभियान पर ध्यान केंद्रित नहीं हो पा रहा है। फिर भी हम लोगों का ग्रुप कतई निराश नहीं है।

स्पष्ट है कि सभी समस्याओं का समाधान गांधी के मार्ग से ही निकलेगा। संघ गांधी मार्ग पर चलने का प्रयत्न करता है तो गांधीवादियों को इस प्रयास में सत्ता और संपत्ति का खतरा नजर आता है। मेरा निवेदन है कि गांधीवादी मित्र सामंजस्य की आवश्यकता पर गंभीरता से विचार करें। नेहरू खानदान की चापलूसी से गांधी का नाम तो लंबे समय तक जीवित रह सकता है लेकिन गांधी विचार धीरे–धीरे समाप्त हो जाएगा। मेरा फिर से निवेदन है कि सभी अच्छे लोगों को एकजुट करने का प्रयास जारी रहना चाहिए।

2–नेहरू परिवार ने गांधी सम्पत्ति और गांधी विचारधारा का किया दुरूपयोग :

मैंने नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत की प्रशंसा की। यह बात मेरे गांधीवादी मित्रों को बहुत बुरी लगी है। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि अनेक गांधीवादी ऐसे हैं जिन्होंने नेहरू शासन में अपार संपत्ति अर्जित की है, जिन्होंने येन केन प्रकारेण लाभ ही लाभ कमाया है और जिनकी रोजी–रोटी नेहरू परिवार से ही चलती है, उन लोगों को यह बात बुरी लगती है कि मैं गांधी का प्रशंसक हूं और मोदी का भी प्रशंसक हूं। लेकिन सच्चाई यह है नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत गांधी को प्रातः स्मरणीय मानते हैं, सावरकर को नहीं मानते। नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत गांधी की लाइन पर चल रहे हैं जो नेहरू परिवार को बुरा लग रहा है क्योंकि नेहरू परिवार ने गांधी शब्द गांधी संपत्ति और गांधी विचारधारा पर अपना कब्जा कर लिया था और अब यदि नरेंद्र मोदी गांधी की प्रशंसा करते हैं तो इन नकली गांधीवादियों को बुरा लगता है। मुझे खुशी है कि इस विषय पर धीरे–धीरे जनजागृति आ रही है और भारत अच्छी तरह समझ रहा है कि यह गांधी का देश है और नरेंद्र मोदी ही गांधी को ईमानदारी से आगे बढ़ा सकते हैं, वह गांधी के नाम की दुकानदारी नहीं करेंगे। 70 वर्षों तक नेहरू परिवार ने भारत में अपनी सरकार चलाई। कभी भी लोक स्वराज्य की दिशा में कोई कदम नहीं बढ़ाया।

हमेशा ही सत्ता और संपत्ति का केंद्रीकरण किया। सारी संपत्ति का धीरे–धीरे सरकारीकरण कर दिया गया। इस प्रकार के नेहरू परिवार की चापलूसी करने वाले गांधीवादियों से मैं दूरी बना कर रखता हूं। मैं ऐसे अनेक गांधीवादियों को जानता हूँ जो अपने को राजनीतिक तिकड़मबाजी से दूर रहने की बात करते हैं और जब चुनाव आते हैं तो नरेंद्र मोदी के खिलाफ 25 प्रकार के षड्यंत्र करते हैं। मैं नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत का पक्षधर हूँ क्योंकि वह गांधी की दिशा में देश को आगे बढ़ा रहे हैं और नेहरू परिवार से मुक्त कर रहे हैं।

3–भारत में कहां कितनी शांति या अशांति :

यदि पूरे भारत को 100 प्रदेशों में बांटकर भारत में शांति और अशांति का आंकलन किया जाए तो पिछले कुछ वर्षों में बहुत बड़ा बदलाव दिख रहा है। कुछ वर्ष पहले बिहार, उत्तर प्रदेश, कश्मीर आदि अशांत क्षेत्रों में गिने जाते थे। केरल को शांत माना जाता था। अब धीरे–धीरे इसमें बहुत बदलाव दिख रहा है। अब कश्मीर, उत्तर प्रदेश, बिहार अपेक्षाकृत शांति की तरफ बढ़ रहे हैं जबकि केरल और बंगाल अशांति की तरफ जा रहे हैं। कश्मीर में तो इतनी तेजी से बदलाव आया है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। बिहार में भी नीतीश कुमार के बाद और उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के आने के बाद शांति के मामले में बड़ा बदलाव दिख रहा है। इस विषय पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए कि यह बदलाव क्यों है।

शांति और अशांति के मामले में पूरी दुनिया का भी एक सर्वेक्षण प्राप्त हुआ है। इसमें 165 देशों को शामिल करके भारत को 126वां स्थान मिला है अर्थात भारत अभी भी अशांति के मामले में बहुत आगे है। आश्चर्य की बात यह है कि रूस का स्थान भारत से भी अधिक नीचे है। सबसे शांत देशों में पुर्तगाल का दसवां स्थान है और पाकिस्तान का स्थान भारत से भी बहुत नीचे है। लेकिन सबसे अच्छी बात यह है कि भारत कुछ वर्ष पहले ही 140वें स्थान पर था जो धीरे–धीरे सुधरकर अब 126वें स्थान पर आ गया है अर्थात भारत धीरे–धीरे शांति की तरफ बढ़ रहा है। यह भारत के लिए एक बहुत अच्छी खबर है। फिर भी हमें इस बात पर गंभीरता से सोचना चाहिए कि शांति के मामले में हम अभी भी इतना नीचे क्यों हैं? केरल और बंगाल को भी इस बात पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। यदि केरल और बंगाल सरीखे प्रदेश शांत नहीं रह सकते तो छत्तीसगढ़ के रामानुजगंज शहर में आकर कुछ सीख लेनी चाहिए।

4–संसद में हंगामा खड़ा करके लोकतंत्र के धैर्य की परीक्षा ना ले राहुल गांधी :

राहुल गांधी ने अपने जीवन में सिर्फ हरा–हरा ही देखा था। बात उन दिनों की है जब मनमोहन सिंह जैसे कठपुतली प्रधानमंत्री थे और सोनिया पुत्र राहुल कठपुतली को नचाने की कला सीख रहे थे। तभी एकाएक देश में अकाल पड़ गया। राहुल ने कभी सूखा और अकाल देखा ही नहीं था। अनाप–शनाप बयान देकर राहुल

ने जिस तरह लगातार नौ वर्ष तक संसद नहीं चलने दी, वह अराजकता का चरमोत्कर्ष था। सोनिया के डर से सभी बड़े कांग्रेसी नेता राहुल की संसद में हंगामें की थाप पर नाचते रहे। राहुल ने ना कभी बोलना सीखा और ना ही कभी गंभीर चिंतन किया। नौ वर्ष के बाद अब न्यायालय ने राहुल को पहली बार झटका दिया है। प्रधानमंत्री के खिलाफ कैसे भी अनाप–शनाप बोलने की दिग्विजयी आदत ने राहुल को यहां तक पहुंचा दिया है कि आज राहुल फिर से पैदल चल–चल कर राजनीति का ककहरा सीखना शुरू कर दिए हैं। आज गुजरात उच्च न्यायालय ने राहुल पर जैसी टिप्पणी की है उस पर राहुल और प्रियंका को गंभीरता से विचार करना चाहिए। सोनिया के हजारों में से किसी एक भी भाषण पर ऐसी नुक्ताचीनी नहीं हुई जैसी कि राहुल के अनेक भाषणों पर हो चुकी है।

राहुल गांधी को मेरी सलाह है कि वे संसद में हंगामा खड़ा करके लोकतंत्र के धैर्य की परीक्षा ना लें। सिर्फ राहुल की गलती के कारण संसद हमेशा ठप होती रही है। राहुल इस बार संसद को लोकतांत्रिक तरीके से चलने दे तो अच्छा रहेगा। मेरी राहुल को यह भी सलाह है कि वह अपनी गलतियों के लिए पश्चाताप करना भी सीखे तो उनके लिए और अच्छा रहेगा। 'राहुल सावरकर नहीं है' –ऐसी गिरी हुई बातें राहुल को भविष्य में बोलने से बचना चाहिए।

5–संजय राउत की भाषा मूर्खतापूर्णः

भारत की राजनीति में उद्धव ठाकरे को भी बहुत शरीफ माना जाता है। उद्धव ठाकरे के मन में कभी सत्ता का मोह भी नहीं था। लेकिन एक कहावत है कि जब कुटनी से व्यक्ति बच जाए तब ही कोई सत्य जीवन जी सकता है। उद्धव ठाकरे संजय राउत के फेर में पड़कर इतना नीचे गिर गए कि उन्होंने अपना सारा जीवन कलंकित कर लिया। संजय राउत राजनीति के जोकर माने जाते हैं। वैसे तो प्रारंभ में ऐसा कहा जाता था कि लालू प्रसाद राजनीति के जोकर हैं लेकिन एक–दो वर्षों में ही सिद्ध हो गया कि लालू जोकर नहीं है बल्कि एक सफल कूटनीतिज्ञ हैं। लालू प्रसाद ने जिस भाषा का उपयोग किया वह उनकी चालाकी थी, शराफत नहीं. दूसरी ओर संजय राउत जिस प्रकार की भाषा बोलते हैं, उसमें मूर्खता छिपी होती है, धूर्तता नहीं। उसमें बचकानापन छुपा होता है। संजय राउत ने ही उद्धव ठाकरे को बदनाम कर दिया। संजय राउत ने शरद पवार को चढ़ा–बढ़ाकर किस जगह तक पहुंचा दिया। इसलिए मेरा व्यक्तिगत रूप से मानना है कि संजय राउत राजनीति के जोकर हैं। संजय राउत के लिखे हुए 'सामना' में लेख भी मेरे कथन की सत्यता प्रमाणित करते हैं।

6–हिन्दूओं पर हो रहा अत्याचारः

आज भारत में हिंदुओं की सबसे बड़ी समस्या यह है कि हिंदुओं को यह कहा जा रहा है कि आप विदेशों से आए हैं, आप भारत के नहीं है। यहां आदिवासियों को समझाया जा रहा है कि आप हिंदू नहीं हैं, आप तो यहां के मूल निवासी हैं। हरिजनों

को समझाया जा रहा है कि आप अत्याचार से पीड़ित हैं, आपको हमेशा दबा कर रखा गया। महिलाओं को समझाया जा रहा है कि आपके साथ पुरुष वर्ग अत्याचार कर रहा है। यह सारी बातें हिंदुओं के खिलाफ बताई जा रही हैं। लेकिन मुसलमानों के बारे में कहीं नहीं पढ़ाया जाता कि मुसलमान कहां से आए हैं। मुसलमानों ने किस तरह अत्याचार किए? मुसलमानों ने महिलाओं के साथ क्या व्यवहार किया? मेरे विचार से इस बात पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है कि जो भी बात लोगों के बीच में फैलाई जा रही है, यह पूरी तरह झूठ है। सच्चाई यह है कि स्वतंत्रता के बाद ना तो आदिवासियों पर कोई अत्याचार हो रहा है, ना हरिजनों पर हो रहा हैना महिलाओं पर हो रहा है। अत्याचार तो सिर्फ और सिर्फ हिंदुओं पर हो रहा है और वह भी भारत की राजनीतिक व्यवस्था के द्वारा। अब इतिहास में यह पढ़ाना बंद कर दीजिए कि हिंदू बाहर से आए हैं या आदिवासी महिलाओं पर अत्याचार हो रहा है।

7–सामाजिक एकता में बाधक कुछ पेशेवर लोग :

मेरे कुछ मित्रों ने यह लिखा है कि सावरकर और गांधी दो विपरीत विचारधाराएं हैं। दोनों कभी एक साथ जुड़ ही नहीं सकती। एक साथ जुड़ना इन दोनों के लिए असंभव कार्य है। मित्रों, क्षत्रिय और ब्राह्मण यह दोनों अलग–अलग विचार धाराएं हैं लेकिन दोनों वर्ण व्यवस्था में एक साथ जुड़ जाती हैं। जहां ब्राह्मण मार्गदर्शक की सीमाओं में बंधा होता है, वहां क्षत्रिय रक्षक की सीमाओं में बंधा होता है। मार्गदर्शक की दिशा में गांधी के विचार चलते हैं और रक्षक की दिशा में सावरकर के विचार चलते हैं। लेकिन दोनों वर्ण व्यवस्था में एकसाथ जुड़ जाते हैं। वर्ण व्यवस्था हिंदुत्व के साथ जुड़ जाती है और यह सारे झगड़े हिंदुत्व में खत्म हो जाते हैं। हिंदू और मुसलमान के झगड़े मानवता के साथ जुड़ जाते हैं और यदि मानवता को सबसे पहले रखा जाए तो हिंदू–मुसलमान के झगड़े भी खत्म हो जाते हैं। यदि आप दोनों को असंभव मानते हैं तो यह आपकी भूल है। यह दोनों एक साथ जुड़ सकते हैं। मैंने प्रयोग करके देखा है और मुझे सफलता भी मिली है। लेकिन इन दोनों के जुड़ने में बाधा बनकर सामने आते हैं कुछ खासपेशेवर लोग जो सावरकर और गांधी को एक साथ जुड़ने नहीं देते। ऐसे पेशेवर लोग ही ब्राह्मण और क्षत्रिय को एक नहीं होने देते, वर्ण व्यवस्था को एक नहीं होने देते, हिंदुओं को एक नहीं होने देते और सारी दुनिया में मनुष्य को भी एक नहीं होने देते। इन पेशेवर लोगों से अगरहम बच जाएं तो हम किसी भी असंभव कार्य को संभव कर सकते हैं।

8–राजघाट के विचारक बापू गांधी :

एक प्रमुख गांधीवादी विचारक बापू गांधी हैं जो राजघाट में रहते हैं। उन्होंने मुझे फेसबुक पर एक पोस्ट में लिखा है कि "आप चाहे कितना भी अच्छा लिख लें, लेकिन वर्तमान भारत में अब कुछ भी सुधरने वाला नहीं है"। मैं बापू गांधी के इस कथन से सहमत नहीं हूं। जिस समय भारत सामाजिक कुरीतियों में जकड़ा हुआ था तब

अकेले स्वामी दयानंद ने सामाजिक बदलाव का बीड़ा उठाया था। जिस समय बौद्ध धर्म भारत को कायर बना रहा था तब शंकराचार्य जी ने उस से मुक्ति पाने का बीड़ा उठाया था। जब भारत ऊपर से नीचे तक अंग्रेजों का गुलाम था और इससे मुक्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं दिख रहा था, तब गांधी ने स्वतंत्रता का आह्वान किया था और जब गांधीवादी तथा सावरकरवादी एक–दूसरे के साथ टकरा रहे थे तब मैंने दोनों के बीच समन्वय का बीड़ा उठाया था। आपके नाम के साथ तो बापू भी जुड़ा हुआ है और गांधी भी जुड़ा हुआ है तो फिर वर्तमान समय में आप इतने निराश क्यों हैं? समस्याओं से जूझने का मार्ग खोजिए और वह मार्ग सत्य और अहिंसा पर चलकर सत्ता और संपत्ति के त्याग से ही निकल सकता है। यदि आप गांधी का नाम रखकर सत्ता और संपत्ति की लड़ाई लड़ते हैं तो आप गलत हैं। वर्तमान दुनिया गलत नहीं है।

मैं स्पष्ट देख रहा हूं कि गांधी के नाम की प्रशंसा करके गांधीवादी सिर्फ सत्ता और संपत्ति की लड़ाई लड़ रहे हैं। दिन–रात गांधी के नाम पर नरेंद्र मोदी के हिंदुत्व और गांधी आश्रम की संपत्ति के लिए लड़ने से किसी भी समस्या का समाधान नहीं होगा। मैं आपकी तरह निराश नहीं हूं। गांधी ने तत्कालीन परिस्थितियों में सत्य और अहिंसा को अपनाकर समस्याओं का समाधान खोजा था। मैं गांधी की नकल करके गांधी नहीं बनना चाहता हूँ बल्कि वर्तमान परिस्थितियों में सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर सत्ता और संपत्ति से दूरी बनाकर समाधान खोजने का प्रयास कर रहा हूं। मैं अपने को पूरी तरह सफल मान रहा हूं। आप सब से निवेदन करता हूं कि आप सभी मेरे इस समाधान पर गंभीरता से विचार करें।

9–देश को सांप्रदायिक समन्वय की जरूरत :

आज नरेंद्र मोदी की सलाह पर भारतीय जनता पार्टी ने बड़ी संख्या में मुसलमानों को सदस्य बनाने का निर्णय किया है। इस कार्य को वर्तमान समय में पार्टी सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। इस समाचार के आने के बाद सावरकरवादियों और गांधीवादियों की जुबान पर ताला बंद है। कोई नहीं कह रहा है कि यह सही हो रहा है या गलत हो रहा है। मैं तो अच्छी तरह देख रहा हूं कि नरेंद्र मोदी पूरी तरह धर्मनिरपेक्षता की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, हिंदू मुसलमान का कोई भेदभाव नहीं कर रहे हैं। बल्कि वहतो सही करने वालों की मदद कर रहे हैं औरजो गलत है उसे दंडित कर रहे हैं चाहे हिंदू हो या मुसलमान कानून का पालन सबको करना होगा क्योंकि कानून की नजर में सभी एक समान हैं । नेहरू काल में जो गलत कानून बन गए और जिस तरह मुस्लिम सांप्रदायिकता को प्रोत्साहित किया गया, उनसभी कानूनों में आवश्यक बदलाव किया जाएगा, लेकिन किसी भी हालत में कोई भी कानून किसी को तोड़ने की छूट नहीं दी जाएगी। मैं सावरकरवादियों और गांधीवादियों से निवेदन करता हूं कि वे लोग अपनी आंखों की पट्टी उतारे और गांधी तथा सावरकर को एक साथजोड़कर देखने की कोशिश करें। आज देश को सांप्रदायिक समन्वय की जरूरत है किसी टकराव की नहीं।

10–उग्रवाद से बचना ही असली अकलमंदी है :

समाचार है कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच टकराव धीरे–धीरे बढ़ रहा है। अफगानिस्तान के आतंकवाद को पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ उपयोग करने के लिए सहायता दी थी। लेकिन भारत ने ही अफगानिस्तान के साथ अपने संबंध सुधार लिए। मैं बहुत पुराने समय से यह लिखता रहा हूं कि अब उग्रवादियों का उपयोग करना हमेशा दुधारी तलवार के समान होता है। एक बार उग्रवाद मजबूत हो जाने के बाद वह आपके खिलाफ भी उपयोग किया जा सकता है। हमने श्रीलंका में देखा कि जिस लिट्टे को पाल–पोसकर इतना बड़ा किया गया कि वही लिट्टे राजीव गांधी की हत्या का आधार बना। पंजाब में जिस भिंडरावाले को पाल–पोसकर बड़ा किया गया वही इंदिरा गांधी की हत्या का आधार बना। जिस नक्सलवाद को बंगाल में साम्यवाद ने पाल–पोसकर बड़ा किया था वही नक्सलवाद आगे चलकर साम्यवाद के विरुद्ध ममता के साथ जुड़ गया और बदले मेंसाम्यवाद की जड़ खोद दी। इस मामले में ममता बनर्जी बहुत सतर्क रही और ममता ने ताकत मिलते ही सर्वप्रथम नक्सलवाद पर भरपूर चोट की। इस मामले में नरेंद्र मोदी भी बहुत सावधान हैं। जिस कट्टरवादी हिंदुत्व की सहायता से नरेंद्र मोदी सत्ता में आए उस कट्टरवादी हिंदुत्व की जगह मोदी जी नरम हिंदुत्व को प्रश्रय दे रहे हैं। पाकिस्तान को ममता और मोदी से सबक लेना चाहिए था। लेकिन मुसलमान अपने को दुनिया का सबसे अधिक संगठित और चालाक मानता है इसलिए पाकिस्तान अफगानिस्तान को प्रश्रय देने की भूल कर बैठा। उसका परिणाम आज प्रत्यक्ष दिख रहा है कि अफगानिस्तान भारत से पहले पाकिस्तान से ही निपट लेना चाहता है। मेरे विचार से अब भी पाकिस्तान को भारत से यह अकल सीखनी चाहिए कि यदि किसी हिरण को शेर बना दिया जाएगा तो वह शाकाहारी नहीं रहेगा। उग्रवाद का भले ही कभी जरूरत पड़ने पर तात्कालिक उपयोग किया जा सकता है लेकिन उग्रवाद को अपने ऊपर कभी हावी नहीं होने देना चाहिए। हमें पाकिस्तान से सबक सीखना चाहिए कि उग्रवादी हिंदुत्व को भी अनियंत्रित और मजबूत होने देने से हम बचें। इस मामले में मैं भारत सरकार से सहमत हूँ।

11–सरकारी नियंत्रण से मुक्त हों शिक्षा और स्वास्थ :

मेरे परिवार का एक लड़का अमेरिका के बोस्टन यूनिवर्सिटी में पढ़ता है। विश्वविद्यालय के द्वारा उसे आर्थिक सहायता भी दी जाती है। कल वह लड़का वहां से लौटकर रायपुर आया था। जब मुझसे मिला तो उसने बताया कि अमेरिका के लोग भारतीय विद्यार्थियों को पूरी दुनिया में अन्य देशों से आए विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक बौद्धिक मानते हैं। वहां भारतीय बच्चों का अधिक सम्मान है। उसने यह भी बताया कि वहां के विश्वविद्यालयों में पढ़ाने का स्टैंडर्ड भारत से बहुत ऊंचा है क्योंकि वहां के विश्वविद्यालयों का खर्च भी भारत से कई गुना अधिक होता है। उस बच्चे ने इन दोनों प्रश्नों का मुझ से कारण पूछा। इस विषय पर मेरी सोच तो यह है कि भारत में वर्ण

व्यवस्था मान्य होने के कारण भारत का बौद्धिक स्तर बहुत ऊंचा रहा था। बचपन से ही ब्राह्मणों के लड़के इस दिशा में तेज गति से चलना शुरू कर देते थे। वह संस्कृत पढ़ते थे, धर्म ग्रंथों का अध्ययन करते थे, तर्क–वितर्क करते थे और निष्कर्ष निकालते थे। कुछ हजार बर्ष पहले जब वर्ण व्यवस्था विकृत हुई तब भारत ज्ञान गुरु की भूमिका से पिछड़ गया और विचारों का आयात करने लगा। फिर भी भारतीय बच्चों में दुनिया के अन्य बच्चों की तुलना में बौद्धिक स्तर अधिक अच्छा है, भले ही वे बच्चे ब्राह्मण हों या नहीं। दूसरी बात यह है कि भारत में अच्छे विद्यालय खोलने की क्षमता होते हुए भी नहीं खोल पाते हैं क्योंकि भारत के लोगों को सस्ती या मुफ्त शिक्षा चाहिए। जब तक आप शिक्षा को स्वतंत्र नहीं करते तब तक हमारे विद्यालयों का स्तर नहीं सुधर सकता। अस्पताल में भी डॉक्टरों की फीस ना बढ़े,स्कूलों की फीस ना बढ़ाई जाए तो भारत में कभी स्टैंडर्ड के स्कूल या अस्पताल नहीं खुल सकेंगे। यदि भारत के पूंजीपति अधिक पैसा देकर पढ़ने या पढ़ाने की क्षमता रखते हैं तो इससे गरीबों को क्या कष्ट है? हमारी सरकार इसमें क्यों दखल देती है? हमारे होनहार बच्चे अधिक पैसा देकर अमेरिका में पढ़े या अमेरिका में इलाज कराये,बेहतर तो यही होता कि वैसी व्यवस्था भारत में ही होती ताकि वह पैसा भारत में ही रहे। मेरे विचार से इस विषय पर गंभीरता से सोचा जाना चाहिए। अस्पताल, स्कूल, आवागमन आदि का निजीकरण कर दिया जाए और सरकार का उन पर कोई नियंत्रण ना हो तब हमारे बच्चों का बाहर जाकर पढ़ना या इलाज कराना रोका जा सकता है।

<u>12–भारत में इंडिया और एन डी ए :</u>

पिछले दिनों भारत में इंडिया और एन डी ए नाम से दो राजनीतिक समूह प्रकट हुए। बताया जाता है कि इंडिया नामक समूह में छब्बीसराजनैतिक दल शामिल हैं तथा एन डी ए में अढ़तीस राजनैतिक दल शामिल हैं। एन डी ए अभी सत्तारूढ़ है और इंडिया नामक समूह उसे बेदखल करने की कोशिश कर रहा है। मेरे विचार से विपक्षी दलों के समूह का नाम इंडिया रखना एक अनावश्यक विवाद को जन्म देना है, क्योंकि इंडिया शब्द चुनाव के लिए उपयोग करना गैरकानूनी घोषित हो सकता है। विपक्ष को जो ताकत मोदी के विरुद्ध लगानी थी वह ताकत चुनाव आयोग और विभिन्न न्यायालयों में लगानी पड़ सकती है या यह भी संभव है कि इंडिया शब्द रखने की मूर्खता के कारण इंडिया और भारत शब्दों के बीच में ध्रुवीकरण शुरू हो जाएजो देश लिए अच्छा नहीं होगा। वैसे कुल मिलाकर वर्तमान परिस्थितियों में नरेंद्र मोदी के नाम का आकर्षण अधिक है भाजपा शब्द का नहीं। उसी तरह इंडिया या भारत शब्द का भी कोई लाभ विपक्ष को नहीं मिल पाएगा क्योंकि चुनाव में ध्रुवीकरण नरेंद्र मोदी के पक्ष और विपक्ष के विरुद्ध होता दिख रहा है। वर्तमान वातावरण को देखते हुए यह बात साफ दिखती है कि नरेंद्र मोदी पिछली बार की तुलना में अधिक शक्तिशाली होकर चुनाव जीत जाएंगे। ऐसे वातावरण में विपक्ष को इंडिया जैसे कानूनी रूप से विवादास्पद नाम का मोह छोड़ देना चाहिए था। नीतीश कुमार इस बात को अच्छी

तरह समझते भी हैं लेकिन पता नहीं क्यों उन्होंने इस विवादास्पद नाम का समर्थन कर दिया। अब तो नरेंद्र मोदी के सामने एक ही विकल्प है कि वे भारत शब्द को आगे करके इंडिया शब्द का मुकाबला करें। इस मुकाबले से उत्तर दक्षिण या हिंदी अंग्रेजी का टकराव शुरू हो सकता है। लेकिन इस टकराव के लिए राहुल गांधी ही दोषी माने जाएंगे, जिन्होंने तिकड़म करके यह नामकरण करवा दिया।

13–स्वीडन एक दिया की भांति कर रहा विश्व का मार्गदर्शन :

मैंने अपने जीवन में कई बार दीया और तूफान के संघर्ष की कहानियां सुनी है। इस बिषय पर फिल्में भी बनी है। लेकिन कल मुझे यह सुनकर सुखद आश्चर्य हुआ कि स्वीडन एक दीपक के समानदिखते हुए भी इस्लाम की विश्वव्यापी तूफानी ताकत के सामने प्रज्वलित रहने की हिम्मत दिखा रहा है। स्वीडन एक बहुत छोटा सा देश है। स्वीडन की गिनती दुनिया के शरीफ देशों में होती है। इसकी कुल सैनिक ताकत भी ना के बराबर है। स्वीडन सरकार ने अपने एक शरणार्थी को कुछ दिन पहले ही कुरान जलाने की अनुमति दी थी। कुरान जलाने की यह घटना बहुत विवादास्पद थी क्योंकि इसके पहले दुनिया में यदि किसी ने ऐसी कोई हिम्मत की तो उसका सर धड़ से जुदा कर दिया जाता था। खुलेआम इस तरह के नारे भी लगाए जाते थे। फ्रांस में भी ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं और भारत में तो होती ही रहती हैं। फिर भी स्वीडन के किसी व्यक्ति ने ऐसी हिम्मत की और स्वीडन सरकार ने उसकी अनुमति दी, यह बात अविश्वसनीय लेकिन सत्य है। आश्चर्य तो यह है कि सिर्फ महीने भर बाद ही उस व्यक्ति को दोबारा वैसा करने की अनुमति दी गई और कहा जाता है कि उस व्यक्ति ने दोबारा अपने घोषित तरीके से कुरान का अपमान किया है। इराक सरकार ने स्वीडन के राजदूत को देश से बाहर निकाल दिया। मुस्लिम देशों के संगठन ने भी स्वीडन सरकार के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया लेकिन कुरान जलाने वाला अभी भी जिंदा है और स्वीडन की सरकार पूरी हिम्मत से उसके साथ खड़ी है।

मेरा सुझाव है कि मुस्लिम देश अपनी नीतियों पर फिर से विचार करें। यदि तूफान अपनी सारी ताकत लगा कर भी दीपक को नहीं बुझा सका तो अब दीपक के नुकसान का कोई डर नहीं रहेगा। नुकसान तो तूफान का ही हो रहा है। यदि दुनिया में इस प्रकार इस्लामिक कट्टरवाद का मजाक बनाया जाना जारी रहता है तो इसके लिए यह दुनिया दोषी नहीं है, स्वीडन सरकार दोषी नहीं है, कुरान जलाने वाला वह व्यक्ति दोषी नहीं है, दोषी तो है वह इस्लामिक कट्टरवाद जिसने संगठन की ताकत पर सारी दुनिया को भयभीत कर रखा है। मेरा स्पष्ट इशारा पाकिस्तान के ईशनिंदा कानून की तरफ है। इस प्रकार के गंदे कानून का खुलकर विरोध होना चाहिए।

14–राजनेताओं के नाटक 'मणिपुर' :

रामलीला में दो भाई राम और रावण बनकर ऐसा नाटक करते हैं कि दर्शक मंत्रमुग्ध हो जाते हैं और प्राप्त धन दोनों भाई आपस में बांट लेते हैं। खेलों में भी प्रायः

इसी तरह की कला का प्रदर्शन होता है। कव्वाली में भी आपने ऐसीहल्की–फुल्की और नकली नोंक–झोंक अवश्य ही देखी होगी। राजनीति में तो ऐसे नाटक हम अक्सर देखते ही रहते हैं। अभी मणिपुर का नाटक चल रहा है। यह नाटक लगभग दो महीने और चलेगा और उसके बाद राजनीतिबाजों का कोई नया नाटक शुरू हो जाएगा। अभी दस दिन पहले ही मध्यप्रदेश में आदिवासी पर पेशाब करने का राजनैतिक नाटक वायरल हुआ था। मणिपुर में आंदोलन की शुरुआत में एक बड़ी भीड़ ने एक ही परिवार के दो पुरुषों की हत्या कर दी और उस परिवार की दो महिलाओं के साथ बलात्कार किया था या उन्हें नंगा करके सरेआम घुमाया। वे महिलाएं और पुरुष सरकार के कानून के अनुसार आदिवासी थे। दो पुरुषों की हत्याओं को इतना हाईलाइट नहीं किया गया जितना कि दो आदिवासी महिलाओं के बलात्कार को। सभी राजनेता दो गुटों में बंटकर इस महिला अत्याचार का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहते हैं। जबकि इस घटना के कई दिनों बाद सैकड़ों लोगों की मणिपुर में हत्याएं हो चुकी हैं जिसमें दोनों गुटों के लोग शामिल हैं। लेकिन इन सैकड़ों हत्याओं को नजरअंदाज करके राजनेता महिला अत्याचार को महत्वपूर्ण मुद्दा बना रहे हैं। प्रधानमंत्री तथा अन्य मंत्री भी इस प्रकार के नाटक में उतना ही शामिल दिखे जितना कि विपक्षी नेता। यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट ने भी स्वतः संज्ञान लेकर इस मामले को बहुत प्राथमिक घोषित कर दिया। राहुल गांधी संसद में हल्ला करने के लिए ऐसे ही विषय को खोज रहे थे। उन्होंने या तो इस विषय को लपक लिया अथवा संसद सत्र शुरू होने की प्रतीक्षा में दो महीने तक इस मुद्दे को दबाए रखा। देशभर में जन भावनाएं भड़काने के लिए मीडिया भी इस विषय पर दिन–रात अपनी टी आर पी बढ़ा रहा है।

मणिपुर में टकराव का मुख्य कारण है आदिवासी और गैर–आदिवासी का विवाद। भारत के तमाम राजनेता महिला अत्याचार का खेल–खेलकर जातीय टकराव सरीखा ही महिला पुरुष के टकराव का वातावरण बनाना चाहते हैं अन्यथा सैकड़ों हत्याओं की तुलना में दो बलात्कारों की सामान्य घटना को इतनी महत्वपूर्ण घटना बनाने की चालाकी नहीं होती। मैं चाहता हूं कि हम आप राजनीति के नाटक से समाज को सावधान करें। वर्ग–विद्वेष ही आगे चलकर वर्ग–संघर्ष का आधार बनता है। राजनेता वर्ग–निर्माण को बहुत ही महत्वपूर्ण मानते हैं। इसे गंभीरता से समझने की जरूरत है।

<u>जिसने जैसा देखा : (मुनि जी की जीवन पर आधारित)</u>

<u>सामाजिक अनुसन्धान का विश्वविद्यालय – बजरंग मुनि</u>

बहुत समय तक मेरे मस्तिष्क में यह धारणा थी कि भारत की समस्याओं के मूल में नेताओं का भ्रष्टाचार और उनकी गलत नियत है किंतु यह समझ पाना कठिन था कि नियत के साथ–साथ उनकी नीतियां भी गलत है। 3 जनवरी 2020 को समाजशास्त्रके प्रख्यात विचारक मार्गदर्शक श्री बजरंग मुनि जी से भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ, उस समय तक मुझे समाजशास्त्र के विषय में लगभग ना के बराबर

जानकारी थी किंतु मुनि जी से भेंट करने के बाद समाजशास्त्र में मेरी रुचि बढ़ती चली गई। फिर भी यह विषय मेरी पूर्व धारणा से अधिक जटिल था। मुनि जी के सानिध्य में यह समझने का अवसर प्राप्त हुआ कि नेताओं की सिर्फ नियत ही खराब नहीं है अपितु नीतियां भी खराब है। पहली बार यह समझ आया कि भारतीय संविधान विकृतियों का संग्रह है और यह विकृतियां सामाजिक व्यवस्था की विकृतियों के रूप में स्थापित हो गई है जिसमें समाज के अधिकार बहुत कम है और तंत्र अधीन संविधान है। मुनि जी की सबसे विशिष्ट बात यह है कि उनकी भाषा शैली अत्यधिक सरल और सहज है और सभी विषयों पर स्पष्ट विश्लेषण हैं। मुनि जी एक स्वतंत्र विचारक है इसलिए स्वतंत्र चर्चा के लिए तैयार रहते हैं, किसी पर भी अपने विचार नहीं थोपते। यदि किसी विषय पर सुधार करना हो तो सहजता से स्वीकार करते हैं। मुनि जी ने बहुत ही सरल भाषा में व्यक्ति, परिवार, समाज और राज्य के मध्य संतुलन को समाजशास्त्र में समावेशित किया है। व्यक्ति की स्वतंत्रता को बिना बाधित किए हुए समाज के द्वारा व्यक्ति की स्वछंदता पर किस प्रकार से नियंत्रण किया जाए इसका भी समाधान दिया है।

2013 में ही मुझे लोक–नियुक्ततंत्र और लोक–नियंत्रित तंत्र के मध्य अंतर समझ आ गया था, किंतु लोक नियंत्रित तंत्र का प्रारूप क्या होगा, यह किस प्रकार से संचालित होगा और लोक स्वराज्य क्या है यह समझना कठिन रहा। श्री बजरंग मुनि जी से मिलने के पश्चात लगभग डेढ़ माह तक तो मुझे यह लगा कि मुनि जी की सभी बातें बे सिर पैर की हैं। यही समझ नहीं आ रहा था कि यह करना क्या चाह रहे हैं। फिर भी यह जिज्ञासा अवश्य थी कि 65 वर्षों तक मुनि जी ने शोध एवं अनुसंधान किया है तो अवश्य ही कुछ ना कुछ विशिष्ट तो होगा ही। लगभग डेढ़ माह के पश्चात मैंने मुनि जी की बातों को गंभीरता पूर्वक सुनना एवं समझना आरंभ कर दिया और लगभग 4 से 5 माह तक कोई प्रश्न नहीं किया केवल गंभीरतापूर्वक सुनता रहा और विचार मंथन करता रहा। मुनि जी से मुझे साम्यवाद, समाजवाद, पूंजीवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद, अंबेडकरवाद और संघ को समझने में बहुत सहायता मिली। संस्था और संगठन, ज्ञान और शिक्षा, कर्तव्य और दायित्व, चंदा दान और भीख का अंतर पता चला। मौलिक अधिकारों को समझना मेरे लिए कठिन था किन्तु मुनि जी ने मौलिक अधिकार, सामाजिक अधिकार एवं संवैधानिक अधिकार की विवेचना बड़े ही सरल तरीके से की है। जिससे इसे समझना सरल हो जाता है। अनैतिक, अपराध और गैरकानूनी कार्यों की विवेचना भी बहुत सहजता से की है। परिवार, व्यवस्था समाज व्यवस्था पर मुनि जी का चिंतन बहुत ही अधिक गहरा है। न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका का मुख्य दायित्व क्या है और इन में आपसी टकराव क्यों है इसका समाधान क्या हो सकता है इस पर मुनि जी के विचार बहुत स्पष्ट और सहज हैं। श्री बजरंग मुनि जी तानाशाही को सबसे खराब मानते हैं और मौलिक अधिकारों को बहुत अधिक प्राथमिकता देते हैं। मुनि जी के अनुसार किसी भी प्रकार की तानाशाही ठीक नहीं होती, किंतु यदि तानाशाही चुनना ही पड़े तब सैन्य तानाशाही, संसदीय

तानाशाही, न्यायिक तानाशाही के स्थान पर तंत्र की तानाशाही को चुनना ठीक है। गुलामी के समय में समाज के द्वारा परिस्थिति अनुसार हिंसा और लोकतंत्र में समाज के द्वारा अहिंसा का समर्थन करते हैं।

इन सभी के अतिरिक्त मुनि जी ने दहेज, श्रम शोषण, महिला सशक्तिकरण, आरक्षण, मृत्युदंड, समान नागरिक संहिता, राइट टू रिकॉल, हिंदू कोड बिल, न्याय व्यवस्था, ग्राम सभा, आर्थिक असमानता, कृत्रिम ऊर्जा, वर्ग संघर्ष, दुनिया भर में बढ़ते हुए स्वार्थ और हिंसा जैसे जटिल विषयों पर विचार मंथन किया हैं। मुनि जी ने वर्णाश्रम व्यवस्था और कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था को ठीक माना है, किंतु ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के स्थान पर नए शब्दों मार्गदर्शक, रक्षक, पालक और सेवक का प्रयोग किया है। जो कि वर्तमान परिस्थिति के हिसाब से बिल्कुल ठीक है। यदि किसी विषय को समझने में समस्या होती है तब मैं मुनि जी को फोन करके उस पर चर्चा अवश्य करता हूं। मेरा यह विचार है कि मुनि जी ने समाजशास्त्र पर जो निष्कर्ष दिए हैं उन पर निरंतर चर्चा और संवाद चलते रहना चाहिए। यदि विद्वानों की विद्वता का लाभ समाज को प्राप्त ना हो तो वह विद्वता उनके साथ ही चली जाती है। इसलिए इन सभी विषयों को शिक्षा पद्धति में सम्मिलित किया जाए तो निश्चित ही समाजशास्त्र के विद्यार्थियों को अद्भुत लाभ प्राप्त होगा। फिर भी यह विषय जटिल तो अवश्य है और पहली बार सुनने पर कोई भी निश्चित स्तर पर मुनि जी का विरोध कर सकता है किंतु जो गुढ़ विचारक है और चिंतन– मंथन कर सकते हैं वह इस विषय को अवश्य समझ पाएंगे।

लेखक –बृजेश राय जी 8077337953

<u>साथियों के लेख :</u>

<u>समान नागरिक संहिता– एक विमर्श</u>

भारत में सत्ता के पक्ष–विपक्ष में कोई भी राजनीतिक संगठन हो किन्तु सत्ता संघर्ष इतने नीच स्तर तक पहुँच गया है कि जहाँ समाज हित के अति आवश्यक विषयों पर होने वाले काम भी राजनीतिक प्रतिद्वंदिता में उलझ जाते हैं। अलबत्ता लक्ष्य कोई भी हो लेकिन इस समय देश की सरकार समान नागरिक संहिता के बनाने की पुरजोर कोशिश कर रही है और विपक्ष इसका विरोध करने के लिए लालायित तो है लेकिन यह गांधी का सपना था तो वह न तो इस मुद्दे को निगल पा रहा है और न उलट पा रहा है। विपक्ष ने थक–हार कर मुस्लिम वर्ग को इस सर्व–समावेशी व्यवस्था के अनावश्यक विरोध का झण्डाबरदार बनाया है। यह लोकतंत्र की बिडम्बना है किसत्ता के प्रतिद्वंद में किसी भी राजनेता के लिए ऐसे विषय का विरोध करना अवश्यक हो जाता है जिसका लाभ उसका विपक्षी उठाना चाहता है, भले ही वह विषय समाज के लिए कितना भी हितकारी हो। राजनेताओं के लिए ऐसी दशा धर्म संकट के समान होती है। इस दशा को झेलने वाला नेता या राजनौतिक संगठन अक्सर इसका विरोध

अपने सबसे मूर्ख मोहरे से ही करवाता है। भारत के सामाजिक तथा राजनैतिक पटल का इस्लामीकरण करने को लालायित भारतीय मुसलमान तथा जातीय श्रेष्ठता को सर्वोच्च मानने वाले सनातनधर्मियों की स्थिति आज ऐसे ही मोहरे की है। धार्मिक तथा जातीय सरकारें (देश) मानव सभ्यता के माथे का कलंक हैं। दुनिया से इनका हर हाल में उन्मूलन होना ही चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में यदि इस्लाम को देखें तो दुनिया की अन्य सभी सभ्यताओं में कम या ज्यादा यह लचीलापन मिलता है कि उसकी परम्परागत मान्यताओं को उसका कोई भी अनुयाई यथावत माने या न माने। लेकिन इस्लाम की मान्यताएं अपने अनुयाईयों को इसकी यथार्थपरक समीक्षा का कोई अधिकार नही देती हैं। यह स्थिति तब तक भी उचित कही जा सकती है जब तक इस्लाम की निजी व्यवस्था समाज के ढांचे को प्रभावित नहीं करती है, लेकिन यह अक्सर समाज के विरुद्ध अपनी व्यवस्था को सर्वोपरि मानने लगता है तब समाज के सामने वर्ग संघर्ष का संकट खडा हो जाता है। आधुनिक समाज की दशा के अनुसार भूमण्डलीकरण इसकी आवश्यकता है और इसके लिए यथार्थपरक तथा समन्वयक व्यवस्था का निर्माण आवश्यक है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए न केवल भारत में बल्कि विश्व भर में एक उपयुक्त'समान व्यक्ति संहिता' का निर्माण अत्यन्त आवश्यक है। अर्थात समान नागरिक संहिता का यह सामान्य अर्थ समझा जाना चाहिए कि समाज में एक ऐसी व्यवस्था बने जिसके नियोजित होने पर कोई भी व्यक्ति या इसका समूह धर्म, अर्थ, राजनीति तथा बाहुबल के आधार पर किसी भी अन्य पर अपना वर्चस्व स्थापित न कर सके।

भारत में कानूनों के बनने के समय राजनैतिक विरोधाभाष मर्यादा तोड़ देता है। इस दशा में जनता भ्रम का शिकार हो जाती है कि ऐसी कोई व्यवस्था बननी भी चाहिए अथवा नहीं! जबकि सरकार तथा विपक्ष का यह उत्तरदायित्व है कि वह व्यवस्था बनने वाले विषय के महत्व को आम जनता के सामने स्पष्ट करने के यथा सम्भव उपाय करे किन्तु ऐसा कुछ भी नहीं होता है! भारत में समान नागरिक संहिता बनने का विषय न केवल स्वतन्त्रता मिलने के समय से ही चर्चा में है बल्कि संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद–44 में इसके निर्माण की आवश्यकता भी स्पष्ट की है। लेकिन आश्चर्य यह है कि व्यवस्था के रूप में जो विषय जनता की अनेक समस्याओं को हल कर सकता है उसे धर्म तथा राजनीति के ठेकेदारो ने वर्ग संघर्ष का कारण बना दिया है। यह भारत देश की विडम्बना है कि यह विषय वर्ग संघर्ष के आधार पर चर्चा में तो आता रहा है लेकिन कभी जन–विमर्श का विषय नही बन सका हैं। यदि ऐसा होता तो जनता स्वयं देश में एक उपयुक्त समान नागरिक संहिता के निर्माण का अलख जगाने निकल पड़ती और यह व्यवस्था बनने पर यह न केवल वर्ग–संघर्ष के उत्पात से बचती बल्कि सत्ता तथा अर्थ का दुरुपयोग करने वाले अनेक नेताओ, धर्म–गुरूओं एवं पूँजीपतियों की गलत नीतियों का शिकार होने से भी बच जाती। सामान्यतया विचार करें तो तत्काल में समान नागरिक संहिता बनने से समाज निम्न बुराईयों से मुक्त हो जाएगा–

1—धार्मिक श्रेष्ठता और धार्मिक संगठनवाद का उन्मूलन।
2—जातीय श्रेष्ठता और जातीय संगठनवाद का उन्मूलन।
3—आरक्षण का उन्मूलन। (सामाजिक एवं राजनैतिक दोनो)।
4—लिंग भेद के आधार पर पनपी श्रेष्ठता का पतन।
5—ऊँच—नीच, छोटे—बडे के भेद—भाव का पतन।
6—क्षेत्रवाद तथा भाषावाद का उन्मूलन।

अर्थात समान नागरिक संहिता का यह अर्थ होता है कि इन विषयो के आधार पर किसी भी व्यक्ति को कोई विशेषाधिकार नही होता है। यद्यपि भारत की मौजूदा व्यवस्था के पैरोकार यही कहेंगें कि भारत का संविधान आरक्षण को छोड़कर समाज की इन सभी समस्याओं के उन्मूलन का मार्ग प्रशस्त करता है। वस्तुतः यह सच नही है। क्योंकि संवैधानिक व्यवस्था द्वारा समाज की रूढ अथवा परम्परागत व्यवस्थाओं को संरक्षित करके व्यवस्था को यथार्थ के अनुकूल नही बनाया जा सकता! ऐसा होना ही असम्भव है। मैने जब व्यवस्था निर्माण के उद्देश्य को समझने का प्रयास किया तो जाना कि हमारा संविधान समाज के लिए ऐसी आश्चर्यजनक आदर्श व्यवस्था का नैरेटिव प्रस्तुत करता है जो एक ओर रूढ परम्पराओं को जीवित रखने की व्यवस्था बनाता है तो दूसरी ओर आधुनिक कसौटी का समाज बनाने की भी घोषणा करता है। सच यह है कि भारत के संविधान निर्माताओं ने परम्परा तथा आधुनिकता का समन्वय करने के प्रयास में समाज के प्राकृतिक स्वरूप को ठुकरा दिया तथा वर्गो को समाज निर्माण का आधार मान लिया। क्या समाज में धर्म, जाति, क्षेत्र भाषा जैसे विषयों को विधिक मान्यता मिलने पर वर्ग समन्वय सम्भव है? वस्तुतः मेरे विचार से परम्परा तथा यथार्थ का समन्वय तब तक बेहद कठिन कार्य है जब तक समाज में ऐसे अनेक व्यक्ति समूह हैं जो अपनी जातीय जीवन पद्यति को मौलिक भी मानते हैं तथा समाज से ज्यादा महत्वपूर्ण भी। ऐसे लोगों की यह मान्यता उन्हें यथार्थ से समन्वय नही करने देती है। लेकिन इस दशा में इस मौलिक तथ्य पर विचार करना भी आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीवन पद्धति निर्धारित करने की स्वतन्त्रता होनी ही चाहिए। किसी के भी रहन—सहन में किसी व्यवस्था या व्यक्ति को हस्तक्षेप करने का अधिकार कैसे हो सकता है? लेकिन सच तो यह भी है कि जब व्यक्ति की जीवन पद्धति समाज के आकार—प्रकार से टकराती है या इससे समन्वय नही करती है तो सार्वजनिक व्यवस्थाओं का निर्वहन नही हो पाता है और परिणाम स्वरूप समाज अस्थिर हो जाता है। इस किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति का समाधान यह है कि समाज मूलतः सहजीवन का प्रसाद है। यदि कोई व्यक्ति समाज में सहजीवन के सिद्धान्त को स्वीकार न करे तो उसे समाज से कुछ भी प्राप्त करने का अधिकार नही हो सकता है! वस्तुतः परस्पर आदान—प्रदान जीवन संचरण के लिए आवश्यक है और व्यवस्था सन्तुलन बनाने के लिए। यह ठीक है कि व्यक्ति को असीम स्वतन्त्रता का मौलिक अधिकार है लेकिन उसकी अपनी मौलिक आवश्यकताएं ही उसे समाज के अनेक बंधनों में बांधती हैं और

यही मौलिक आवश्यकता व्यक्ति की असीम स्वतंत्रता का समाज में समावेश करने का मार्ग प्रशस्त करती है। इस उलझाव का समाधान तो यही हो सकता है कि धर्म, व्यक्ति का निजी विषय है, इस विषय के राजकीय संरक्षण तथा विरोध की कोई व्यवस्था नही हो सकती है। किसी व्यक्ति की जाति को भी कोई विधिक संरक्षण नही होना चाहिए। इस विमर्श में इस तथ्य पर विचार करना भी आवश्यक है कि न तो पुरानी सभी व्यवस्थाएं खराब हो सकती हैं और न सर्वकालिक रूप से उपयुक्त। वस्तुतः यह सब काल–प्रवाह के अनुसार बदलने वाले समाज के आकार–प्रकार पर निर्भर करता है कि व्यवस्था का स्वरूप कैसा हो? आधुनिक युग में अन्तरधार्मिक तथा अन्तर्जातीय टकराव समाज के अस्तित्व के लिए बेहद खतरनाक हो गये हैं। इस दशा में यह कहना ठीक रहेगा कि समाज सभ्यता को यथार्थ की कसौटी के आधार पर पुनः परिभाषित करे तथा उसके अनुसार समाज व्यवस्था की एक आधुनिक संहिता बनाये।

भारत के संविधान में कानून बनाने के लिए सामाजिक नियोजन के विषयों को समवर्ती सूची में रखा गया है। समान नागरिक संहिता भी सामाजिक नियोजन का ही विषय है। संविधान के अनुसार इस विषय पर केन्द्र तथा राज्य दोनो स्तर पर कानून बनाया जा सकता है। हां, यह संवैधानिक व्यवस्था है कि किसी विषय पर व्यवस्था बनने पर यदि दोनों के बीच कोई टकराव होता है तो संसद द्वारा निर्मित व्यवस्था को ही प्रभावी माना जाएगा। लेकिन समान नागरिक संहिता बनने के विषय में मै इस संवैधानिक व्यवस्था को ठीक नही मानता हूँ। क्योंकि समान नागरिक संहिता का अर्थ भारत के सभी व्यक्तियों के लिए एक जैसा कानून बनाना है और अलग–अलग राज्यों के विधान मण्डल कोई राष्ट्रीय स्तर की समन्वयक व्यवस्था बनाने के लिए उपयुक्त निकाय नही हैं। यह कार्य देश की संसद को ही करना चाहिए।

लेखक – नरेन्द रघुनाथ्र सिंह 9012432074

भावी भारत का संविधान सहयोग राशि ₹ 50	वर्तमान संविधान की खामियों एवं उसके निराकरण का सुंदर विश्लेषण करती, देशभर के तमाम विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के साथ निरंतर 20 वर्षों तक शोध के उपरांत लिखी इस पुस्तक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अब तक तीन बार इसे अलग–अलग संस्थानों के द्वारा छपवाया जा चुका है।
मुनि मंथन निष्कर्ष सहयोग राशि ₹ 50	श्रद्धेय मुनि जी के 70 वर्षों तक देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर 'विचार मंथन' के निष्कर्षों को सूत्र रूप में समेटे, इस पुस्तक को तैयार होने के बाद भी 4 वर्षों तक इसमें संकलित सिद्धांतों पर देशव्यापी विमर्श के उपरांत यह पुस्तक आपके सामने आ पाई है।
मौलिक व्यवस्था का विचार सहयोग राशि ₹ 50	यह पुस्तक 'व्यवस्था' पर तमाम वैश्विक संदर्भों के आधार पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। समाज के प्रत्येक इकाई के स्वतंत्रता सुरक्षा के साथ पोषण की गारंटी पर एक रिसर्च मॉडल के रूप में है यह पुस्तक है।
बस अब बहुत हो चुका सहयोग राशि ₹ 50	व्यवस्था की खामियों एवं उसके समाधान के लिए आवश्यक प्रभावी विचार एवं उद्दीपक ऊर्जा को अपने में समेटे इस पुस्तक को लिखा है अशोक गाड़िया जी ने। यह पुस्तक 'व्यवस्था परिवर्तन' के वैचारिक पृष्ठभूमि को तैयार करती है।
मुनि मंथन सहयोग राशि ₹ 10	श्रद्धेय मुनि जी के विचारों को गागर में सागर सा अपने में समेटे सीधे सरल समझ में आने वाली शैली में लिखी यह पुस्तक, एक रंगकर्मी निर्देशक निर्माता एवं लेखक आनंद गुप्ता जी की रचना है। शराफत से समझदारी की ओर जाने वाले मार्ग का पथ प्रदर्शक के रूप में या पुस्तक पठनीय है।
रामानुजगंज एक आवाज सहयोग राशि ₹ 10	अपने में श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के जीवन की झलक समेटे इस पुस्तक को श्री नरेंद्र जी ने नाटक की शैली में लिखा है। सामाजिक समस्याओं एवं उसके निराकरण पर पात्रों के माध्यम से यथार्थ को नए रंग रोगन में प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।
एक ही रास्ता सहयोग राशि ₹ 10	नुक्कड़ नाटक गीत संगीत जैसे सांस्कृतिक विधाओं से लोगों को समझदार बनने की प्रेरणा देने के लिए मुनि जी ने अपनी युवावस्था से ही प्रयास शुरू कर दिए थे। उन तमाम गीतों एवं दृश्यों को नाटक के रूप में इस पुस्तक में लिपिबद्ध किया गया है।

इन पुस्तकों का एक सेट मंगाने के लिए मात्र ₹ 100 का आर्थिक सहयोग और अतिरिक्त डाक खर्च देना होगा। इन पुस्तकों को एक साथ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–8318621282, 7869250001, 9617079344

हमारी संस्थाएँ

- मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान • ज्ञान यज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य • समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार के कार्य

- देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

- ज्ञान चर्चा-प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।

महायज्ञ • वर्ष में एक बार या दो बार बड़े सामुहिक यज्ञ का आयोजन।

मार्गदर्शक मंडल

- ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।

ज्ञान कुंभ

- वर्ष में दो बार पंद्रह-पंद्रह दिनों के ज्ञान कुंभ जिसमें मार्ग दर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो-दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- यू टयूब चैनल
- फेसबुक एप से प्रसारण
- इंस्टाग्राम
- वाट्सएप ग्रुप से प्रसारण
- टेलीग्राम
- जूम एप पर वेबिनार
- कू एप

ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का माह में दो प्रति का प्रकाशन सुचारू रूप से होना शुरू हो गया है। इसकी सहयोग राशि रू. 100/- वार्षिक अभी तय किया गया है। लेख प्रस्तुती आदि पर सुझाव अवश्य दें।

पंजीकृत पाक्षिक
पंजीकरण क्रमांक-68939/98

डाक पंजीयन क्रमांक- छ.ग./रायगढ़/010/2022-2024

प्रति,

श्री/श्रीमती ______________________________

____

____

____

संदेश

वर्तमान संसदीय लोक तंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रुपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा। लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुड़िये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

– बजरंगलाल

पत्र व्यवहार का पता

पता – बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बॉक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492001
Website : www.margdarshak.info

प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी – बजरंगलाल

09617079344

Email : bajrang.muni@gmail.com
support@margdarshak.info
Facebook Id : बजरंग मुनि (User Name)

मुद्रक – माया प्रेस रामानुजगंज, सरगुजा (छ.ग.)